

2910
Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. १८१६
क

Title कालीसौत्रम्

Author

Extent ३ पत्र Age

Subject सौत्र

काली स्तोत्रं

नं. १८१६

61/10

F-3-
complete
m/m

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो देव्यै नमः ॥ ॐ

कपाली काली के करवर कपाली

मवाती बानी जे विभव न बावानी ब

सकरी ॥ विधाता माता ते सकल स

कवीली भवलीली म



क

१

ऊटसिरमालांडरभरी॥५॥सुरंगीमाते
मीसमकनकअंगीच्छबभनीगुला
नारीसारीसरलसुतप्यारीसुखसनी
क्रपाकीजैदीजैसमपसुधलीजैम
मजनीसुरेसेवेदेवेतरतसुधलेवे

२

तमसुनी॥५॥उमारासाशिवज
पतनासाछिनछिनासतीसीतागी
तासुरनरअतीतागुणागुणा॥५॥अधे
डीब्रह्मंडीपलकनकवेडीतमवणी
तहीकंन्यायन्यापदरतनरणानि।

क

२

सदिना॥६॥समारूढं गूढं प्रगुण
रूढं उत षरी॥धुराधारीष्पारी प्रसरगु
णदारी उषसनी॥७॥सुरासेवादेवानि
गमलहमीवालहतहः सनीज्ञानी
ध्यानी त्रिभुवनबावानी वसतहः

२

द्विवीलीभवलीलीसखधनरसी॥
लीसनसनी॥ समशानीकल्यानीस
कलजगानीजसभरी॥ ५॥ तहीब्रह्मा
विष्णुशिवसहिदिनीसोमगतहः त
हीकर्ताहरतापवनजलस्यवीया

१४४

० क तगगण है ॥ तही वेद भ्या से सव स
१ ख विला से मगण है ॥ १ ॥ तही भक्ति स
३ क्तित वचरण तेरी लगत हा ॥ मृगा तेनी
प्रवे प्रगहरण तेरी सरण हः ॥
शंकराचार्य विरचितं का